आइए नवरात्रि का उत्सव सच्चे अर्थ में मनाएं

शरद ऋतु के आगमन के साथ पूरे भारत वर्ष में नौ दिनों के लिए नवरात्रि का पवित्र उत्सव अनेक तरह से मनाया जाता है| इस पर्व के दौरान विशेष कर देवियों की आराधना की महिमा है| जगत जननी शक्ति स्वरूपा जगदंबा, ज्ञान की देवी श्री सरस्वती तथा धन-संपदा की देवी श्री लक्ष्मी की उपासना का इस पर्व में विशेष महत्व है। उसमें भी शिवशक्ती स्वरूप माँ दुर्गा, माँ काली, माँ अंबा, माँ बहुचरा, माँ चामुंडा, माँ खोडियार, माँ कात्यायिनि इत्यादि की विशेष पुजा होती है| परंतु क्या हम नवरात्रि उत्सव के तथा विविध देवियों के सच्चे आध्यात्मिक रहस्य को जान कर उसके मर्म को तथा महत्व को समझकर इस पावन पर्व को गौरव के साथ यथार्थ रीति से मनाते हैं? आज जिस तरह से हम इस पावन पर्व को मनाते हैं, उसके संदधर्भ में यह प्रश्न उपस्थित होते हैं|

सामान्य रीति से आज नवरात्रि के पर्व को ज़्यादातर हम इस तरह मनाते हैं। देर रात्रि तक रास गरबा खेलकर, फैशनेबल वस्त्र पहनकर, विविध गहने पहनकर, विविध स्पर्धाओं का आयोजन कर, भव्य मंडप बांधकर, खाने-पीने की व्यवस्था कर। इसमें अनेक बार मौज-मझा के साथ साथ विलासिता, वासना, लोलुपता तथा शुद्र वृत्तियां भी दिखाई देती हैं, जो नवरात्रि के महत्व, मर्म, तथा गौरव पर सीधा प्रहार है| ऐसे भी लोग हैं, जो नवरात्रि के दौरान भक्ति भाव के साथ उपवास करते हैं| अनेक प्रकार के व्रत रखते है, देवियों के मंदिरों में दर्शन तथा पुजा-अर्चना के लिए जाते हैं| घर में भी देवियों की आराधना करते हैं| इस तरह मनाई जानेवाली नवरात्रि बेशक ऊपर बताई गई रीति से ज्यादा सार्थक है, परंतु यदि हम नवरात्रि पर्व के सच्चे आध्यात्मिक रहस्य को जानकार, उसके मर्म को तथा महत्व को समझकर तथा पर्व के गौरव को समझकर यथार्थ रीति से उसको मनाएंगे तो उच्च कोटि की सिद्धियां प्राप्त कर सकेंगे| तो आइए, इस पर्व के कई आध्यात्मिक रहस्यों को समझने का प्रयत्न करें|

- महिषासुर राक्षस का वध करनेवाली महादुर्गा वास्तव में सांकेतिक हैं। यह वास्तव में ज्योति-स्वरूप शिव परमात्मा से इस संगम युग पर जो शक्तियाँ हम आत्माएँ प्राप्त कर आसुरि वृत्ति तथा आसुरि शक्तियों पर विजय प्राप्त करते है इसकी यादगार है।
- बाघ, सिंह, मगर, जैसे क्रूर जंगली प्राणियों पर देवियों को बैठा हुआ बताना, यह भी सांकेतिक है| बाघ पर बैठी माँ जगदंबा, सिंह पर आसनस्थ माँ दुर्गा, मगर पर खड़ी माँ खोडियार- यह सब मानव जाती के महाशत्रु समान काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार,

इत्यादि विकारों पर विजय प्राप्त करने की निशानी हैं|

- कमल जैसे नाजुक आसन पर स्थित श्री लक्ष्मी तथा हंस पर आसनस्थ श्री सरस्वती यह निर्मल और पवित्र जीवन का प्रतिक है|
- माँ दुर्गा अर्थात दुष्कर्मो अथवा पापकर्मो से हमारी रक्षा करनेवाली दिव्य शक्ति हैं| मानव के स्वभाव संस्कार में रही हुई खामियाँ, शारीरिक दोष और दुर्गुणों का नाश करनेवाली दिव्य शक्ति खोडियार माँ के रूप में पूजी जाती है|
- देवियों के विविध स्वरूपों को विविध शस्त्रों से सुसज्जित बताया गया है, जैसे त्रिशूल, तलवार, फरसी, धनुष्य-बाण, खझा, गदा, इत्यादि| देवियों के धारण किए हुए ये शस्त्र भी सांकेतिक हैं| उनके वास्तविक आध्यात्मिक रहस्यों को जानेंगे तो ज्यादा लाभ होगा| असल में कलियुग के अंत में परमात्मा शिव की दी गई ज्ञान, योग तथा धारणा की शिक्षा को इन शस्त्रों के रूप में बताया गया है, जिनका उपयोग कर इन नौ दिनों के दौरान हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे मानव जाती के दुश्मनों के समान विकारों पर विजय प्राप्त करना है और पवित्रता को अपनाना है|
- देवियों को विविध दुर्लभ वस्त्रों, अति मूल्यवान अलंकारों तथा रत्नजड़ित ताज से सजा हुआ बताया जाता है| इसका रहस्य यह है कि हम जब परमात्मा शिव की ज्ञान तथा योग की शिक्षा द्वारा विकारों पर विजय प्राप्त करते हैं और अपने विकर्मों का विनाश करते हैं तब हम देवत्व को प्राप्त करके सर्वगुण संपन्न तथा हर प्रकार से समृद्ध बन जाते हैं|
- कई देवियों को, जैसे कि दुर्गा के चंद्रघंटा स्वरूप को तिन आँखे बताई गई हैं जो इसका प्रतिक है कि परमात्मा शिव ने संगमयुग पर दिए गए तीनों काल के ज्ञान से हम त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बन जाते हैं और ज्ञान रूपी तीसरा नेत्र प्राप्त करते हैं|
- किसी देहधारी नारी शक्ति या देवी द्वारा राक्षसों का संहार हुआ होगा, ऐसा मानने के बदले परमात्मा शिव की आराधना के परिणाम स्वरूप हमको प्राप्त होनेवाली दिव्य शक्तियों द्वारा हमारे में रहनेवाली आसुरी वृत्तियों का संहार हुआ होगा, ऐसा मानना तथा नवरात्री के पर्व के दौरान वैसा करना ज्यादा सार्थक माना जाएगा|
- परमात्मा शिव वर्त्तमान समय में कलियुगी आसुरी शक्तियों पर विजय प्राप्त करा कर सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना कर रहे हैं, जिसकी यादगार यह नवरात्री का महापर्व हैं|

नवरात्रि का पर्व सिर्फ देवियों की पूजा का ही उत्सव नहीं है, परन्तु नारी के मान-सन्मान तथा प्रतिष्ठा को स्थापित करने का पर्व है| आज जब नारी पर अनेक प्रकार के अत्याचार गुजारे जा रहे हैं, उसका शोषण हो रहा है, तब इस उत्सव के सच्चे रहस्य को समझकर अगर उसे मनाया जाए तो नारी की प्रतिष्ठा को पुन: स्थापित कर

सकेंगे। यह है नवरात्री के पावन पर्व की महिमा तथा रहस्य।

सार रूप में नवरात्रि के इन नौ दिनों के दौरान अंतर्मुखी बनकर, विकारों से दूर रहकर, पवित्रता को धारण कर, सब के साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार कर, परमात्मा शिव को याद कर, सच्चे अर्थ में हमें ही शिवशक्ति स्वरूप धारण कर विघ्नविनाशक और विजयी बनना है|

------ ॐ शांति ------

ब्रह्माकुमार प्रफुलचंद्र

सान ड़िएगो : यु एस ए

(मो) +91 98258 92710